गद्य खण्ड

हिन्दी गद्य का इतिहास

गद्य आधुनिक काल की सबसे महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है। संसार के प्रत्येक साहित्य में पहले पद्य का विकास हुआ है और फिर गद्य का। हिन्दी साहित्य विकास में भी प्रारंभिक रचनाएँ पद्य में है। गद्य का पूर्ण व पारिमार्जित विकास बाद में हुआ।

गद्य का सबसे प्राचीन रूप चौदहवीं शताब्दी के गोरखपंथी गद्य-ग्रन्थों में मिलता है, जो ब्रजभाषा मिश्रित गद्य का उदाहरण है। खड़ीबोली गद्य का सर्वप्रथम ग्रंथ गंगकवि का 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' माना जाता है। इसकी भाषा आधुनिक खड़ीबोली के आसपास की है।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में हिन्दी गद्य का सूत्रपात होता है। इस काल में खड़ीबोली गद्य की प्रतिष्ठा मुन्शी सदासुखलाल, इन्शाअल्ला खाँ, लल्लूजी लाल और सदल मिश्र ने की। विकसित परिवर्धित होते गद्यकाल को प्रमुख रूप से चार भागों में बाँटा जा सकता है-

1. प्रथम उत्थान काल (सन् 1850 से 1900 ई. तक)

हिन्दी गद्य का निर्माण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके द्वारा प्रकाशित 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' के माध्यम से एक नई दिशा की ओर बढ़ता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने बोलचाल की भाषा के आधार पर हिन्दी गद्य को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। भारतेन्दु और उनके साथ के लेखकों ने नाटक, निबंध, आलोचना, उपन्यास, प्रहसन आदि विभिन्न विधाओं के साथ साहित्य में प्रवेश किया। इस काल में कविता की भाषा ब्रजभाषा थी, किन्तु गद्य की भाषा में खड़ीबोली का उपयोग किया गया। इस युग में प्रकाशित पत्रिकाएँ 'कवि-वचनसुधा', 'हिन्दी प्रदीप', आनन्द कादम्बिनी ने विविध विधाओं के प्रकाशन में योगदान दिया। निबंधों की दृष्टि से विषय में विविधता थी। समाज सुधार की भावना, राजनीतिक चेतना, हास्य-व्यंग्य, सामाजिक कुरीतियों तथा राष्ट्र की समस्याओं को विषय बनाया गया था। नाटकों के क्षेत्र में भारतेन्दुजी ने स्वयं नाटक लिखे तथा रंगमंच की स्थापना की। उनके द्वारा लिखित 'अंधेर नगरी', 'प्रेमजोगिनी' आज भी प्रासंगिक हैं। उपन्यास, कहानी की तुलना में इस काल में निबन्ध, समालोचना तथा आत्मकथा विधा का प्रारंभ हुआ। भारतेन्दु युग समाज सुधार, देशभक्ति, राष्ट्रीय चेतना, विदेशी शासन के प्रति आक्रोश तथा राष्ट्रीय एकता के शंखनाद से गुंजित था।' इस काल के प्रमुख लेखक थे-बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रताप नारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' आदि।

2. द्वितीय उत्थान काल (द्विवेदी युग-सन् 1900 से 1920 ई. तक)

इस युग की प्रेरक शक्ति पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी थे। सन् 1903 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक बनने के बाद द्विवेदी जी ने प्रकाशन कर खड़ीबोली को विकसित और परिष्कृत करने में अभूतपूर्व योगदान दिया। भाषा को व्याकरण सम्मत बनाने तथा शब्दकोश में निरन्तर वृद्धि की दृष्टि से यह युग महत्वपूर्ण था। गद्य और पद्य दोनों की भाषा खड़ीबोली बन रही थी। अतः भाषा की शुद्धता तथा वर्तनी की एकरूपता पर बल दिया गया।

द्विवेदी युग उदार राष्ट्रीयता, जागरण, समाज सुधार तथा उच्चादर्शों का युग है। इस काल को नवजागरण काल भी कहा गया।

निबंध की दृष्टि से श्रेष्ठतम निबंध इस समय लिखे गए । वैचारिक व ललित दोनों प्रकार के निबंध लिखे गए। प्रमुख निबंधकारों में चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', अध्यापक पूर्ण सिंह, बाबू श्याम सुन्दर दास, बालमुकुन्द गुप्त तथा उपन्यास-कहानी की दृष्टि से पं. किशोरीलाल गोस्वामी, गोपालराम गहमरी, बंगमहिला, श्रीनिवासदास, देवकीनन्दन खत्री (तिलस्मी उपन्यास) उल्लेखनीय हैं। आत्मकथा लेखन की दृष्टि से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की स्फुट रूप में लिखी आत्मकथा तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की आत्मकथाएँ उपलब्ध होती हैं।

3. तृतीय उत्थान काल (सन् 1920 से 1940 तक)

गद्य का परिमार्जित रूप 1920 के बाद गंभीरता तथा विशिष्ट शैली के साथ प्रस्तुत हुआ। रामचन्द्र शुक्ल (निबंध), प्रेमचन्द्र (कहानी-उपन्यास), जयशंकर प्रसाद (नाटक) इस काल के महत्वपूर्ण रचनाकार थे। शुक्लजी ने विश्लेषणात्मक निबंध तथा समास प्रधान शैली का प्रणयन किया। कहानी-उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द्र ने सामान्य जन की भाषा को प्रमुखता देते हुए महत्वपूर्ण कहानी, उपन्यास लिखे। पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, कफन जैसी कहानियों तथा गबन, गोदान, कर्मभूमि जैसे श्रेष्ठतम उपन्यासों के प्रणेता प्रेमचन्द्र ने निबंध भी लिखे एवं साहित्य के उद्देश्य का गहरा विश्लेषण किया।

नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक कथानकों के आधार पर वर्तमान की समस्याओं पर दृष्टिपात किया। अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त इनके महत्वपूर्ण नाटक हैं। प्रसाद के अतिरिक्त हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविन्ददास, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', उदयशंकर भट्ट आदि इस युग के अन्य नाटककार हैं।

समालोचना के क्षेत्र में बाबू गुलाबराय, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नंद दुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के नाम उल्लेखनीय है।

एकांकी विधा की दृष्टि से डॉ. रामकुमार वर्मा, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', सेठ गोविन्ददास का विशिष्ट स्थान है। भारतीय जननाट्य संघ (इप्टा) ने रंगमंच परम्परा को विकसित किया। इसके अतिरिक्त आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र विधाएँ भी इस काल में लिखी गईं ।

4. चतुर्थ उत्थान काल (सन् 1940 से वर्तमानकाल तक)

यह काल कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इस काल में स्वातंत्र्योत्तर पूर्व स्थितियाँ तथा स्वतंत्रता के बाद (1947 ई.) का प्रभाव मौजूद है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अहिंसा आंदोलन की सक्रियता तथा स्वतंत्रता की प्राप्ति, पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान से संपर्क का प्रभाव साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। सोवियत रूस की समाजवादी क्रांति तथा 1936 ई. प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना ने काव्य एवं गद्य दोनों को नई दिशा दी।

निबंध विधा में नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, महादेवी वर्मा, शांतिप्रिय द्विवेदी, डॉ. रघुवीर सिंह, डॉ. विद्यानिवास मिश्र का नाम उल्लेखनीय है। प्रभाकर माचवे, हरिशंकर परसाई, शरदजोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी हास्य-व्यंग्य निबंध लेखन में प्रमुख नाम थे।

नाटक और एकांकी की दृष्टि से भुवनेश्वर प्रसाद, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', जगदीशचन्द्र 'माथुर', डॉ. धर्मवीर भारती, (अंधायुग) मोहन राकेश (आषाढ़ का एक दिन, आधे-अधूरे) नाट्य क्षेत्र के उल्लेखनीय नाम हैं।

इस काल में उपन्यास विधा की दृष्टि से जैनेन्द्रकुमार, अज्ञेय, यशपाल, 'सुनीता', त्यागपत्र, शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, झूठा-सच नामक उपन्यास महत्वपूर्ण हैं इसी काल में उपन्यास एक नई प्रवृत्ति आंचलिक उपन्यास के रूप में दिखाई पड़ता हैं जिसका प्रतिनिधित्व फणीश्वरनाथ रेणु (मैला आँचल), उदयशंकर भट्ट (सागर, लहरें और मनुष्य) नागार्जुन (वरुण के बेटे) करते हैं।

कहानीकारों में यशपाल, मार्कण्डेय, कमलेश्वर, भीष्मसाहनी, निर्मलवर्मा, श्रीलाल शुक्ल, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, अमरकान्त के नाम महत्वपूर्ण हैं।

आत्मकथा के क्षेत्र में डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन' लिखित 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ, 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर' सुप्रसिद्ध आत्मकथा है। लेखनशैली की आत्मीयता और भाषा के प्रवाह की दृष्टि से यह उल्लेखनीय कृति हैं।

यात्रा साहित्य की दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन, भगवत शरण उपाध्याय, अमृतराय के नाम विशेष प्रसिद्ध हैं। रिपोर्ताज नवीनतम विधा है जिसमें रांगेय राघव, प्रभाकर माचवे, धर्मवीर भारती का नाम लिया जा सकता है।

संस्मरण साहित्य की दृष्टि से क्रांतिकारियों के संस्मरण भगवानदास माहौर लिखित शहीद भगतसिंह, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद के संस्मरण तथा शिवरानी जी का 'प्रेमचन्द्र घर में' संस्मरण महत्वपूर्ण हैं।

रेखाचित्र के क्षेत्र श्रीमती महादेवी वर्मा, देवेन्द्र सत्यार्थी के अतीत के चल चित्र, स्मृति की रेखाएँ और रेखाएँ बोल

उठीं तथा जीवनी क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखी जीवनी तथा अमृतराय की 'कलम का सिपाही' प्रशंसनीय ग्रंथ हैं।

हिन्दी गद्य के संक्षिप्त विकास पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि हिन्दी गद्य निरन्तर विकासशील है और उसमें नये प्रयोग हो रहे हैं।

हिन्दी गद्य विधाएँ (संक्षिप्त परिचय)

हिन्दी गद्य की विधाओं को प्रमुखत: मुख्य और गौण दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। मुख्य विधाएँ हैं– नाटक, एकांकी, निबन्ध, कहानी, उपन्यास, समालोचना। गौण विधाओं में जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, रेखाचित्र, संस्मरण, पत्रविधा, साक्षात्कार हैं।

संक्षेप में इनका विकास व रूप निम्नानुसार है–

1. नाटक, एकांकी विधा–नाटक, एकांकी दोनों दृश्य विधा हैं। संस्कृत में नाटकों की समृद्धशाली परम्परा रही हैं। जिसमें महाकवि कालिदास, भवभूति उल्लेखनीय हैं। हिन्दी नाटकों की परम्परा भारतेन्दुयुग से मानी जाती है। भारतेन्दु के अंधेर–नगरी, नीलदेवी, भारत दुर्दशा, प्रेम योगिनी, बालकृष्ण भट्ट का 'वेणी संहार' इस युग के प्रमुख नाटक हैं। नाटकों में रूपक, प्रहसन, व्यायोग, नाटिका, भाण, सट्टक जैसे नाट्यरूपों को भी अपनाया गया, साथ ही पारसी थियेटर भी सक्रिय था।

भारतेन्दु के पश्चात् जयशंकर प्रसाद का नाम नाट्यक्षेत्र में अग्रणी है। उनके ध्रुवस्वामिनी, करुणालय, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त आदि नाटक ऐतिहासिक परिवेश पर आधारित थे। प्रसाद के अतिरिक्त उपेन्द्रनाथ अश्क, सेठ गोविन्ददास, हरिकृष्ण प्रेमी, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, भुवनेश्वर, रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती का नाम उल्लेखनीय है।

एकांकी विधा वह दृश्य विधा है जो एक अंक पर आधारित होती है। एकांकी में संकलन त्रय (कार्य, समय, स्थान) महत्वपूर्ण होते हैं। एकांकी विकास की दृष्टि से जयशंकर प्रसाद के 'एक घूँट' (संवत् 1983) को आधुनिक एकांकियों में प्रथम माना जाता है। इसके पश्चात् डॉ. रामकुमार वर्मा, (चारूमित्र, रेशमी टाई, सप्तकिरण, दीपदान,) उपेन्द्रनाथ अश्क, उदयशंकर भट्ट, विनोद रस्तोगी, सुरेन्द्र वर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं।

नाटक, एकांकी में सामाजिक जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति तथा समस्याओं का सूक्ष्म समाधान मिलता है। रंगमंचीय सार्थकता इस विधा के लिए आवश्यक हैं। रेडियो रूपक, संगीत रूपक, एकल नाट्य (मोनोलॉग) गीतिनाट्य भी इस विधा में सम्मिलित है।

2. उपन्यास :– उपन्यास शब्द का शाब्दिक अर्थ है– समीप रखना। उपन्यास में प्रसादन अर्थात् आनन्द का भाव निहित है।

हिन्दी उपन्यास लेखन विधा का प्रारंभ भारतेन्दु युग से ही दिखाई पड़ता है। हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' (1882) माना जाता है। भारतेन्दु युग में अनूदित उपन्यासों के साथ सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी, ऐयारी, जासूसी उपन्यास भी लिखे गए। देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास चन्द्रकान्ता सन्तति (चौबीस भाग 1896) चन्द्रकान्ता (1882) बहुत अधिक प्रसिद्ध हुए।

उपन्यास के क्षेत्र में द्विवेदी युग के लेखक प्रेमचन्द्र का नाम उल्लेखनीय है। गोदान, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, निर्मला जैसे प्रसिद्ध उपन्यासों में मध्यवर्ग व निम्नवर्ग की आर्थिक, सामाजिक स्थिति को आधार बनाकर प्रेमचंद ने बिना किसी वर्ग, वर्ण भेद के 'मनुष्यता' को सर्वोपरि मानकर अपना कथा साहित्य लिखा। उनके उपन्यास एवं कहानियों में 'सामान्य व्यक्ति' को सामान्य, सरल भाषा में अभिव्यक्ति मिली। उनकी भाषा में सहजता है। वे उर्दू में प्रारंभ में लिखा करते थे अत: हिन्दी, उर्दू का प्रभाव उनकी भाषा में मौजूद है। प्रेमचंद के अतिरिक्त यशपाल (झूठा–सच)जयशंकर प्रसाद (कंकाल) जैनेन्द्र (त्यागपत्र), अज्ञेय (शेखर एक जीवनी), अमृतलाल नागर (मानस का हंस), भीष्म साहनी (तमस), निर्मल वर्मा (लाल टीन की छत) उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं।

3. कहानी :– कथा सुनने की सामान्य प्रवृत्ति ने ही कहानी को जन्म दिया है। प्राचीन काल से कहानियों की

एक वृहत परम्परा रही है। उपनिषद् पुराण, रामायण, महाभारत, पंचतंत्र की कहानियों के रूप में कहानी का आरंभिक विकास देखा जा सकता है। मूलत: कहानी वह गद्य रचना है जो कहानीकार की कल्पना, अनुभव के माध्यम से पात्रों में जीवन की किसी एक घटना या चरित्र का सृजन करती है। कहानी में कथावस्तु, पात्र या चरित्रचित्रण, संवाद, वातावरण या देशकाल, भाषाशैली व उद्देश्य प्रमुख तत्व के रूप में होते हैं। शैली की दृष्टि से ऐतिहासिक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक एवं डायरी शैली में भी कहानियाँ लिखी गईं।

हिन्दी के आरंभिक काल में मनोरंजन को ध्यान में रखकर कहानियाँ लिखी गईं। इनमें लल्लूलाल का 'प्रेमसागर', सदल मिश्र का 'नासिकेतोपाख्यान', इंशाअल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' मौलिक आख्यान हैं।

सन् 1900 में सरस्वती पत्रिका में श्री किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती', दुलाईवाली (बंगमहिला), ग्यारह वर्ष का समय (रामचन्द्र शुक्ल), टोकरी भर मिट्टी (माधवराव सप्रे) कहानियाँ आईं। इनमें से किसी एक को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी सिद्ध करने का प्रयास हुआ है। इसके बाद चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की 'उसने कहा था' (1915ई.) में प्रकाशित हुई। संवेदना और शिल्प की दृष्टि से यह कहानी बेजोड़ है। 1916 में प्रेमचंद्र की कहानी 'पंचपरमेश्वर' प्रकाशित हुई। प्रेमचंद की कहानियाँ सामाजिक चेतना और सामान्य व्यक्ति की मानसिक स्थिति का बहुत सुन्दर व यथार्थ रूप में चित्रण करती हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानियों में बूढ़ी काकी, ईदगाह, रामलीला, दो बैलों की कथा, पूस की रात, और कफन है। प्रेमचंद के साथ ही जयशंकर प्रसाद ने भी वर्तमान के समाधान अतीत में खोजने के प्रयास में श्रेष्ठतम कहानियाँ लिखीं। उनकी कहानियों में मार्मिक संवेदना, सामाजिकता की प्रधानता थी। उनकी प्रमुख कहानियाँ है पुरस्कार, आकाशदीप मधुआ, गुंडा, प्रतिध्वनि, नीरा, ममता आदि।

इसके अतिरिक्त सुदर्शन की 'हार की जीत', विश्वभरनाथ शर्मा कौशिक 'ताई' तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, सुभद्राकुमारी चौहान, भगवतीचरण वर्मा, जैनेन्द्र, यशपाल जैसे कहानीकार भी अलग-अलग भावसंवेदना व विचार शैली की कहानियाँ लिख रहे थे। हिन्दी कहानी का नवीन विकास भी दिखाई पड़ता है। इसमें मोहन राकेश, भीष्म साहनी, अमरकान्त, ज्ञानप्रकाश, निर्मल वर्मा, ज्ञानरंजन, फणीश्वरनाथ रेणु, हरिशंकर परसाई का नाम उल्लेखनीय हैं।

स्वातंत्र्योत्तर युग में कहानी के क्षेत्र में नई कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समानान्तर कहानी नामक विभिन्न आंदोलन हुए। इस प्रकार हिन्दी कहानी पर्याप्त समृद्ध और ऊर्जावान होकर निरन्तर विकासशील हैं।

4. निबन्ध विधा :- निबन्ध का धात्वर्थ है-सुगठित अथवा कसा हुआ बंध। इस प्रकार निबन्ध में आकार की लघुता तथा विचारों की कसावट अनिवार्य है।

निबन्ध वह गद्यरचना है जिसमें सीमित आकार में किसी विषय का प्रतिपादन एक विशेष निजीपन संगति व सम्बद्धता के साथ किया जाता है।

निबन्ध के तीन भेद किये जा सकते हैं :- (1) वर्णनात्मक (2) विचार मूलक (3) भावात्मक/ललित निबन्ध।

हिन्दी में निबन्ध विधा का प्रारम्भ भारतेन्दु युगीन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से माना जाता है। विविध विषयों पर लिखित भारतेन्दु युग के निबंधों में गंभीर तथा व्यंग्य विनोद से पूर्ण भाषा, क्षेत्रीय मुहावरों, लोकोक्तियों, शब्दों का प्रयोग था। भारतेन्दु के अतिरिक्त बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, सर्वश्रेष्ठ निबंधकार थे। शिवशम्भु का चिट्ठा, यमलोक की यात्रा, बात आदि उल्लेखनीय निबन्ध हैं।

द्विवेदीकाल निबंधों की दृष्टि से महत्वपूर्ण काल है। इस काल में विचारात्मक और ललित निबंधों का बाहुल्य है। अंग्रेजी के निबंधों के अनुवाद भी आए। इस काल के प्रमुख निबंधकार थे महावीर प्रसाद द्विवेदी, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', अध्यापक पूर्ण सिंह, बाबू श्याम सुंदर दास, गुलाबराय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, पद्मसिंह शर्मा।

इन निबंधकारों ने साहित्य की महत्ता, नाटक, उपन्यास, समाज और साहित्य, कला का विवेचन, कर्त्तव्यपालन,

फिर निराश क्यों? जैसे प्रेरणात्मक तथा विचारात्मक निबंध लिखे। अध्यापक पूर्ण सिंह ने 'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम' जैसे महत्वपूर्ण निबंध लिखे। इस काल के निबंधों की भाषा में विचार अभिव्यक्ति के लिए लक्षणा और व्यंजना शक्ति को महत्व मिला। निबंध प्रभावाभिव्यंजक शैली, ओजगुण से पूर्ण हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी निबंध क्षेत्र के सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेखक हैं। 'विचार बीथी' और 'चिंतामणि' में संगृहीत शुक्लजी के निबंध न केवल विचार चिन्तन से पूर्ण थे वरन् मनोवैज्ञानिक धरातल पर भी खरे थे। सरसता और गांभीर्य की विशेषता लिए शुक्लजी वैज्ञानिक की तरह विषय का विश्लेषण करते हैं।

भाव-मनोविकारों पर लिखे उनके निबंध भय, क्रोध, ईर्ष्या, उत्साह, श्रद्धा-भक्ति, लोभ और प्रीति 1912 से 1919 ई. में नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित हुए थे, जो बाद में चिन्तामणि भाग एक में संगृहीत हुए। इन निबंधों में शुक्लजी मनोवैज्ञानिक की तरह भावों की व्याख्या कर उन्हें परिभाषित करते हैं।

शुक्लजी के अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद विचारपरक व गंभीर निबंधकार हैं। उनके निबंध काव्य कला तथा अन्य निबन्ध' नामक ग्रंथ में संगृहीत है। प्रसाद के अतिरिक्त महादेवी वर्मा ने भी साहित्यिक विषय तथा नारी समस्याओं पर गहराई से विश्लेषण कर निबंध लिखे जो 'शृंखला की कड़ियाँ' में संगृहीत हैं।

इसके अतिरिक्त पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी 'पंचपात्र' में संगृहीत निबंध, शांतिप्रिय द्विवेदी का 'कवि और काव्य', शिवपूजन सहाय का 'कुछ' निबंध संग्रह, रघुवीर सिंह (ताज) महत्वपूर्ण हैं।

भावात्मक शैली के निबंधकारों में रायकृष्णदास, माखनलाल चतुर्वेदी, भदन्त आनन्द कौत्स्यायान, रामधारी सिंह दिनकर प्रमुख हैं। ललित निबंध की दृष्टि से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं', शिरीष के फूल, आम फिर बौरा गए, ठाकुर जी का बटोर, कुटज निबंध सांस्कृतिक चेतना का निर्माण करते हैं। इन निबंधों में मनुष्य की महत्ता पर जोर दिया गया है।

1940 के बाद प्रयोगवाद के प्रवर्तक अज्ञेय के निबंध 'आत्मनेपद' और 'भवंती' में मिलते हैं।

व्यंग्य निबंधकारों में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, ज्ञान चतुर्वेदी, रविन्द्रनाथ त्यागी आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। ये सभी हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ व्यंग्य निबंध लेखक हैं। हिन्दी निबंध के क्षेत्र में ललित निबंध विधा एक महत्वपूर्ण विधा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस निबंध विधा के पुरोधा पुरुष हैं। डॉ. विद्या निवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, श्यामसुंदर दुबे, रमेशचन्द्र शाह, अमृतराय, निर्मल वर्मा, श्रीराम परिहार आदि निबंधकारों ने हिन्दी ललित निबंध को समृद्ध किया है।

अन्य विधाएँ :-

1. जीवनी साहित्य :- जीवनी साहित्य की रचना किसी विशिष्ट व्यक्ति अथवा महापुरुष को केन्द्र में रखकर लिखी जाती हैं। जीवनी में जन्म से लेकर मृत्यु तक की महत्वपूर्ण घटनाओं के माध्यम से जीवनी नायक का चित्रण किया जाता है। जीवनी लेखन पूर्वग्रह से मुक्त तटस्थ भाव से लिखना आवश्यक है। विषय की दृष्टि से इसमें पाँच भेद होते है :-

1. सन्त चरित्र 2. ऐतिहासिक चरित्र 3. राष्ट्रनेता, 4. विदेशी चरित्र 5. साहित्यिक चरित्र।

कुछ प्रमुख जीवनियाँ हैं:- गोपाल शर्मा शास्त्री कृत स्वामीदयानन्द स्वामी, सुशीला नायर द्वारा लिखी बापू के कारावास की कहानी, जगमोहन वर्मा कृत बप्पारावल, बुद्धदेव, सम्पूर्णानन्द कृत हर्षवर्धन, छत्रसाल, राजनीतिक चरित्रों में लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, जयप्रकाश नारायण, इन्दिरागांधी की जीवनियाँ महत्वपूर्ण हैं। साहित्यक चरित्रों में अमृतराय कृत 'कलम का सिपाही', विष्णुप्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' (शरद चन्द्र चटर्जी पर आधारित) उल्लेखनीय जीवनियाँ हैं।

2. आत्मकथा :- जीवनी में जीवनवृतान्त दूसरे व्यक्ति द्वारा लिखा जाता है जबकि आत्मकथा में व्यक्ति स्वयं अपने जीवन की कथा स्मृतियों के आधार पर लिखता है। आत्मकथा में निष्पक्षता आवश्यक है। गुण-दोषों का तटस्थ विश्लेषण तथा काल्पनिक बातों-घटनाओं से बचना चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रवाह व रोचकता भी आवश्यक हैं।

हिन्दी की प्रथम आत्मकथा बनारसीदास जैन कृत 'अर्द्धकथानक' है। भारतेन्दु कृत 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती', डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा, राहुल सांकृत्यायन की 'मेरी जीवन गाथा' के अतिरिक्त डॉ. हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा जो चार खण्डों में है। 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', नीड़ का निर्माण फिर-फिर, बसेरे से दूर, दश द्वार से सोपान तक, प्रसिद्ध लोकप्रिय आत्मकथाएँ हैं।

रेखाचित्र-संस्मरण :- अतीत के अनुभवों और प्रभावों को शब्द के माध्यम से जब अभिव्यक्ति मिलती है तो उसे संस्मरण कहा जाता है। 'सरस्वती' में रामकुमार खेमका, रामेश्वरी नेहरू के यात्रा-संस्मरण 'सुधा' (1921) में वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'कुछ संस्मरण' 'झलक' (1938) में हरिऔध की स्मृतियाँ, हंस (1937) का प्रेमचन्द्र स्मृति अंक संस्मरण की दृष्टि से उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त आचार्य चतुर सेन शास्त्री, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, महादेवी वर्मा के नाम प्रसिद्ध हैं।

रेखाचित्र की विधा संस्मरण से मिलती जुलती है इसमें लेखक शब्दों के माध्यम से व्यक्ति का पूर्ण चित्र उद्घाटित करता है। रेखाचित्र में कथा का आभास मिलता है। इसकी अलग-अलग शैलियाँ मिलती हैं- कथा शैली, वर्णन शैली, आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, संबोधन शैली, संवाद शैली।

रेखा चित्रकारों में महादेवी जी ने 'अतीत के चलचित्र' में नारी पीड़ा के अनेक रूप चित्रित किए हैं। इसके अतिरिक्त स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार (जिसमें पशु पक्षी को परिवार के अंग के रूप में चित्रित किया गया है) उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। बनारसीदास चतुर्वेदी ने देश-विदेश के कई महान व्यक्तियों को रेखाचित्र द्वारा अंकित किया है। माखनलाल चतुर्वेदी का 'समय के पांव' तथा कृष्णासोबती का 'हम हशमत' भी उल्लेखनीय है।

यात्रा वृत्तान्त :- यात्रा साहित्य में अलग-अलग स्थानों की यात्राओं का रोचक तथा ज्ञानपरक वर्णन मिलता है। राहुल सांकृत्यायन ने तो 'घुमक्कड़ शास्त्र' लिखा जिसमें वे 'घुमक्कड़ी' को रस की तरह बताते हैं। कुछ प्रमुख यात्रा वृत्तान्त हैं-भगवत शरण उपाध्याय (वो दुनिया, सागर की लहरों पर) अज्ञेय (अरे यायावर रहेगा याद) निर्मल वर्मा (चीड़ों पर चाँदनी) कमलेश्वर (खण्डित यात्राएँ) अमृतलाल बेगड़ (सौन्दर्य की नदी नर्मदा) आदि।

पत्र साहित्य :- पत्र आत्मप्रकाशन का महत्वपूर्ण माध्यम है। पत्र लेखक का व्यक्तित्व और उसकी आत्मप्रकाशन की क्षमता पत्र के विधायक तत्व हैं। डॉ. रामचन्द्र तिवारी कहते हैं-'पत्र साहित्य का महत्व इसलिए मान्य है कि उसमें पत्र लेखक मुक्त होकर अपने को व्यक्त करता है।'

पत्र का शिल्प लेखक की अपनी निजी क्षमता, संवेदना और कला पर निर्भर करता है।

हिन्दी साहित्य में इस विधा का विकास 1950 के बाद माना जाता है। बैजनाथ सिंह 'विनोद' द्वारा संकलित 'द्विवेदी पत्रावली' और द्विवेदी युग के 'साहित्यकारों के पत्र', बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संकलित 'पद्मसिंह शर्मा के पत्र', किशोरीदास वाजपेयी द्वारा संकलित साहित्यकारों के पत्र, हरिवशंराय बच्चन द्वारा सम्पादित 'पंत के दो सौ पत्र' के अतिरिक्त ज्ञानोदय का 'पत्र अंक' के रूप में ज्ञान, विचार, चिंतन का रूप पत्रविधा के माध्यम से विकसित होता है।

इन प्रमुख विधाओं के अतिरिक्त रिपोर्ताज, डायरी, साक्षात्कार भी गद्य विधाओं में सम्मिलित हैं।

कहानी का स्वरूप, तत्व एवं विशेषताएँ

हिन्दी गद्य साहित्य में 'कहानी' का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कथा सुनने की प्रवृत्ति मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। संसार के सभी प्राचीन साहित्य में कहानियों की वृहत परम्परा मिलती है। मनुष्य ने जबसे बोलना सीखा तभी से यह किसी घटना की अभिव्यक्ति करने लगा और यहीं से कहानी का जन्म हुआ। कहानी में एक घटना, चरित्र या समस्या को केन्द्र में रखा जाता है।

कहानी की परिभाषा :- कहानी को किसी निश्चित परिभाषा में नहीं बाँधा जा सकता किन्तु फिर भी भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने इसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है :-

प्रेमचन्द्र के शब्दों में ''कहानी में बहुत विश्लेषण की आवश्यकता या गुंजाइश नहीं होती, यहाँ हमारा उद्देश्य

मनुष्य को चित्रित करना नहीं वरन् उसके चरित्र का एक अंश दिखाना है।''

श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार के अनुसार ''घटनात्मक इकहरे चित्रण का नाम कहानी है।''

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर कहानी को व्यापक स्तर पर देखते हुए मानते थे कि 'जीवन का प्रतिक्षण एक सारगर्भित कहानी है।'

इस प्रकार कहानी एक संवेदनापूर्ण विशिष्ट दृष्टिकोण या उद्देश्य को लेकर जीवन की किसी घटना या चरित्र का रोचक व प्रभावशाली चित्रण है। कहानी में छोटे संवाद, चरित्रों की संख्या सीमित एवं स्वरूप जिज्ञासापूर्ण होना चाहिए।

विविध उद्देश्य व कथावस्तु के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है :-

1. कथानक प्रधान 2. चरित्र प्रधान 3. वातावरण प्रधान 4. विविध कहानियाँ।

कथानक प्रधान कहानी में कथातत्व के साथ ही वर्णन, इतिवृत्त को भी महत्व मिला एवं कौतूहल और प्रवाह का प्रधान्य रहा। चरित्र प्रधान कहानी में चरित्र विश्लेषण को महत्व मिला। इस दृष्टि से प्रेमचन्द्र, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी तथा अज्ञेय की कहानियाँ प्रसिद्ध है। जैसे–उसने कहा था, कफन एवं नम्बर दस आदि।

वातावरण प्रधान कहानी में ऐतिहासिक वातावरण या घटनाओं को महत्व मिला। जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ– पुरस्कार, आकाशदीप, ममता, प्रेमचन्द्र की शतरंज के खिलाड़ी, गोविन्दवल्लभ पंत की जूठा आम इस प्रकार की ही कहानियाँ है।

विविध कहानियों में हास्य–व्यंग्य तथा प्रतीकात्मकता कहानियों का सम्मिलन किया जा सकता है। प्रेमचंद की 'मोरे रामशास्त्री', यशपाल की 'कुत्ते की पूँछ', अज्ञेय की 'शत्रु' या हरिशंकर परसाई की कहानियाँ इसमें रखी जा सकती हैं।

कहानी के तत्त्व :- सामान्यत: कहानी के छ: तत्व स्वीकार किए जाते हैं – 1. कथानक, 2. पात्र और चरित्रचित्रण 3. संवाद या कथोपकथन 4. देशकाल या वातावरण 5. भाषा शैली 6. उद्देश्य।

1. कथानक : – कथानक कहानी की नींव होता है। कहानी की कथावस्तु ऐतिहासिक, पौराणिक, राजनीतिक, पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक, काल्पनिक हो सकती है। कथानक के संगठन को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। 1. आरम्भ 2. मध्य 3. चरम सीमा या अंत।

कथानक का आरम्भ आकर्षक और जिज्ञासापूर्ण होना चाहिए। शीर्षक कथानक के आरंभ में पूर्ण होना चाहिए जो विषय के अनुकूल निश्चयबोधक एवं छोटा हो।

2. पात्र और चरित्र चित्रण :- पात्र या चरित्र चित्रण कहानी का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। कहानी चरित्रों के आधार पर ही आगे बढ़ती है। प्रेमचन्द्र लिखते हैं– 'जब हमारे चरित्र इतने सजीव और आकर्षक होते हैं कि पाठक अपने को उसके स्थान पर समझ लेता है तभी उसे कहानी में आनन्द प्राप्त होता है। अगर लेखक ने अपने पात्रों के प्रति पाठक में यह सहानुभूति नहीं उत्पन्न कर दी तो वह अपने उद्देश्य में असफल है'।

पात्र सजीव और कथानक या वातावरण के अनुकूल उनकी वेशभूषा एवं भाषा होनी चाहिए। कहानी छोटी होती है अत: उसमें पात्रों की संख्या भी सीमित होनी चाहिए।

3. कथोपकथन या संवाद :- संवादों के माध्यम से ही पात्र जीवंत होते हैं तथा कथानक सजीव होता है। कथोपकथन पात्रों के अनुकूल, स्वाभाविक होने चाहिए। संक्षिप्त, सरल, तर्क युक्त और कौतूहल पूर्ण संवाद कहानी को प्रभावशाली बनाते हैं।

4. देशकाल या वातावरण :- कहानी में देशकाल या वातावरण का विशिष्ट महत्व है। युग के अनुसार वेशभूषा, रीतिरिवाज, विचार, भाषाशैली आवश्यक है। विशेषरूप से ऐतिहासिक कहानियाँ या ग्रामीण परिवेश से जुड़ी कहानियाँ या विदेशी वातावरण पर आधारित कहानियों में इनका ध्यान रखना आवश्यक है।

5. भाषा शैली :- कहानी को सजीवता प्रदान करने में भाषा का विशेष महत्व है। सहज एवं सुसंगठित वाक्यविन्यास युक्त भाषा वातावरण को चित्रित करने में सहयोगी होती है। बहुत क्लिष्ट, तत्सम शब्दावली भाषा को बोझिल करती हैं तथा पाठक से दूर करती है। इसलिए आवश्यक है कि कहानी जैसी लोकप्रिय विधा में उस भाषा का उपयोग हो जो जीवन के निकट हो किन्तु देशकाल का ध्यान भी रखा जाए। यदि देशकाल ऐतिहासिक परिवेश का राजदरबार या विशेष काल से संबंधित है तो भाषा उसी के अनुकूल होनी चाहिए।

कहानी की मुख्य चार शैलियाँ प्रचलित हैं :-

1. ऐतिहासिक शैली
2. आत्मचरित शैली
3. पत्रात्मक शैली
4. डायरी शैली।

उद्देश्य या केन्द्रीय भाव :- कथा साहित्य का साधारण उद्देश्य मनोरंजन माना जाता है, किन्तु यह उद्देश्य पूर्ण नहीं है क्योंकि विशुद्ध मनोरंजन साहित्य की सार्थकता को नष्ट कर देता है। कहानी की रचना किसी उद्देश्य को आधार बनाकर की जाती है, उसमें एक ऐसी मूल संवेदना होती है। जिसका अनुभवकर पाठक उसके विषय में सोचने के लिए बाध्य हो जाता है। इसे कहानी का केन्द्रीय भाव कहा जाता है। मर्म या उद्देश्य कहानी का प्राणतत्व होता है।

निबन्ध का स्वरूप एवं विशेषताएँ

निबन्ध का धात्वर्थ है–सुगठित अथवा कसा हुआ बंध। जिसका अर्थ है भली प्रकार बंधी हुई परिमार्जिन और प्रौढ़ रचना। अंग्रेजी में निबंध को ऐसे (Essay) कहते है।

हिन्दी के श्रेष्ठ निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।' डॉ. गुलाबराय के कथनानुसार–'निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव, सजीवता तथा आवश्यक संगति, सम्बद्धता के साथ किया गया हो।'

निबंध लेखक के निजीपन व वैयक्तिक विचार–अनुभूति से पूर्ण होते हैं।

निबंध के प्रमुख भेद हैं :-

1. वर्णनात्मक - इस प्रकार के निबंध प्राय: किसी दर्शनीयस्थल मेले, तीर्थस्थान, प्राकृतिक दृश्य से संबंधित होते है। इनमें भाषा प्रसादगुण सम्पन्न, सरस, सजीव होती हैं इसमें चित्रात्मकता महत्वपूर्ण होती है।

2. कथात्मक :- इन निबन्धों में किसी काल्पनिक वृत्त, आत्मचरितात्मक प्रसंग, जीवनी, आत्मकथा पौराणिक कथा का उपयोग किया जाता है। 'कथा–तत्व' इसमें प्रमुख होता है। दिनकर का 'कबीर साहब से भेंट' इसी प्रकार का निबंध है।

3. विचारात्मक :- इस प्रकार के निबंधों में सुव्यवस्थित रूप से किसी विषय पर विचार व्यक्त होते हैं। इनमें तर्क, चिंतन की प्रधानता होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'रसात्मक बोध के विविधरूप' या 'कविता क्या है' निबंध इसी श्रेणी का है। इसमें बुद्धितत्व की प्रधानता है।

4. भावात्मक :- इस प्रकार के निबंध आत्माभिव्यंजना तथा भाव प्रधान शैली में लिखे जाते है। इसमें कल्पना और काव्य तत्व का भी समावेश होता है। सरदार पूर्ण सिंह के निबंध 'मजदूरी और प्रेम', डॉ. रघुवीर सिंह का 'फतहपुर सीकरी', इस प्रकार के निबंधों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

निबंध के इन प्रमुख भेदों के अतिरिक्त हास्य–व्यंग्य परक निबंध भी मिलते है। इनमें हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी के व्यंग्य निबंध प्रमुख हैं। भारतेन्दु काल में लिखित 'शिवशम्भु का चिट्ठा' 'यमलोक की यात्रा' भी व्यंग्य विनोद भाषा में लिखे गये है।

निबंध शैली के आधार पर ही लेखकों में भिन्नता तथा उनकी विशेषताओं का आकलन किया जा सकता है। भाषा शैली में बाह्य और आंतरिक दोनों तत्व सम्मिलित होते हैं।

निबंध के आवश्यक तत्व

निबन्ध लेखन के लिए कुछ आवश्यक तत्व हैं :-

1. एकान्विति :- निबंध के लिए आवश्यक है कि उसमें एकसूत्रता हो। निबंध में किसी विषय का विश्लेषण करते समय बिखरे विचारों या खण्ड-खण्ड में बँटे विचारों का विश्लेषण कर एक बिन्दु से आरम्भ कर विकसित करना चाहिए तथा बिखराव से बचाना चाहिए।

2. आत्मतत्व की प्रधानता :-

निबंध में आत्मतत्व की प्रधानता होती है। निबंधकार के व्यक्तित्व और शैली का प्रभाव ही पाठक से उसकी आत्मीयता स्थापित करता है। प्रसिद्ध निबंधकार लैम्ब ने एक स्थान पर लिखा है ''मैं अपने पाठक से बातचीत करता हूँ''।

3. कलात्मकता :- निबंध कलात्मकता से पूर्ण होना चाहिए। उसमें ऐसी विशेषताएँ होनी चाहिए कि छोटे आकार में वह रस निर्मित कर पाठक को रसास्वाद दे। इसके लिए विषय की रोचकता के साथ भाषा शैली भी रोचक होनी चाहिए। रोचकता का यहाँ तात्पर्य यह नहीं कि इसमें स्तरहीनता हो। निबंध गठन में विषय के अनुरूप गंभीरता, ओज, आवश्यक है। व्यंग्य निबंधों की भाषा व्यंग्यपूर्ण, तीखी मार्मिकता लिए होनी चाहिए।

इस प्रकार निबंध विधा निरन्तर विकासशील है।

लोक साहित्य

आदिम मनुष्य की सृजनात्मकता जिन विभिन्न माध्यमों में अभिव्यक्त होती रही है, उनमें भाषा एक सशक्त माध्यम रही है। भाषा को पा लेने के बाद मनुष्य ने अपने सुख-दुख अपने हर्ष-उनमर्ष को जिन गेय तथा आख्यानक रचनाओं में व्यक्त किया वे सभी रचनाएँ लोक साहित्य में परिगणित होती हैं। लोक के अनुभव और विचार जब भाषा के स्तर पर कलात्मक संरचना में अभिव्यक्त होते हैं तब लोक साहित्य साकार होता है। लोक-साहित्य के अन्तर्गत लोकगीत, लोक कथाएँ, लोक कहावतें और लोक मुहावरे आदि का समावेश होता है। लोक साहित्य का सीधा संबंध लोक जीवन से है। अत: लोक की परम्पराएँ और लोक जीवन के मूल्य लोक साहित्य में समाहित होते हैं। लोक साहित्य समूह जीवन की चित्तवृत्तियों का उद्घाटक हैं। अत: लोक साहित्य की रचना भी सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

सामाजिक परिवर्तन के क्रम में लोक समाज विभिन्न जीवन आवश्यकताओं के कारण जिन अनेक स्तरों से गुजरता रहा है। उनमें यायावरी जीवन पद्धति से कृषि-कर्म से जुड़ी जीवन पद्धति तक लोक साहित्य निरंतर अपनी उपस्थिति प्रकट करता रहा है और अपनी आंतरिक प्रयोगशीलता के कारण अपने समय और समाज को अभिव्यक्त करने में सक्षम सिद्ध होता रहता है। प्रारंभिक लोक साहित्य प्रकृति प्रेरित संवेदनाओं से निष्पन्न है। जबकि ग्राम समूह के स्तर पर रचा जाने वाला लोक साहित्य लोक संस्कारों की कर्मकाण्डीय परंपराओं में भी विकसित हुआ है। लोक साहित्य लोक के श्रम तथा उससे निष्पन्न फलान्विति के आनंद की अनुभूतियों से परिपूर्ण है। प्रकृति संस्कार और जीवनचर्या के साथ-साथ मनुष्य की संवेदनाओं की सहज भाव अभिव्यक्ति ही लोक साहित्य में केन्द्रित है।

जीवनगत विभिन्न व्यावसायिक क्रिया-पद्धतियों का समावेश लोक साहित्य में रहता है। अत: लोक साहित्य उन सभी तरह की जीवन-चर्चाओं की संप्रेरणाओं से भी अपना उत्प्रेरण प्राप्त करता रहा है। अपनी इसी शक्ति के कारण लोक साहित्य सामाजिक परंपराओं को अपने कलेवर में सँजोए हुए है। समाज की अनेक प्रामाणिक अनुभूतियों और विचार प्रणालियों का लेखा-जोखा लोक साहित्य में समावेशित है।

मध्यप्रदेश अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण लोक साहित्य के प्रणयन में काफी उर्वर रहा है मध्यप्रदेश वह भूमि है जहाँ जीवन ने अपनी आँखे सृष्टि रचना के प्रारंभिक काल में खोली हैं। जंगलों, पहाड़ों , नदियों और समतली भू भौतिकी संरचना के कारण मध्यप्रदेश के विभिन्न अंचलों में जो लोक जीवन विकसित हुआ वह विभिन्न लोकांचलों को रूपायित करता है। इसी आधार पर मध्यप्रदेश में मालवा, निमाड़, बुंदेलखण्ड, बघेलखण्ड और पहाड़ी क्षेत्रों में विभिन्न लोक संस्कृतियों का अभ्युदय हुआ। इन अंचलों की अपनी-अपनी क्षेत्रीय बोलियाँ भी अस्तित्व में आई। इन बोलियों में मालवी, निमाड़ी, बुंदेली, बघेली बोलियाँ प्रमुख हैं। इन बोलियों में रचा गया साहित्य ही मध्यप्रदेश का लोक साहित्य माना जाता है।